

ONLINE TAIYARI GROUP --> +91-9555951655

**ONLINE TAIYARI GROUP**

**+91-9555951655**

**समास**

Visit :- [www.Gk1NotesPDF.com](http://www.Gk1NotesPDF.com)

## समास

‘समास’ शब्द का शाब्दिक अर्थ है- संक्षिप्त करना। सम्+आस् = ‘सम्’ का अर्थ है- अच्छी तरह पास एवं ‘आस्’ का अर्थ है- बैठना या मिलना। अर्थात् दो शब्दों को पास-पास मिलाना।

‘जब परस्पर सम्बन्ध रखने वाले दो या दो से अधिक शब्दों के बीच की विभक्ति हटाकर, उन्हें मिलाकर जब एक नया स्वतन्त्र शब्द बनाया जाता है, तब इस मेल को समास कहते हैं।’

परस्पर मिले हुए शब्दों को समस्त-पद अर्थात् समास किया हुआ, या सामासिक शब्द कहते हैं। जैसे- यथाशक्ति, त्रिभुवन, रामराज्य आदि।

समस्त पद के शब्दों (मिले हुए शब्दों) को अलग-अलग करने की प्रक्रिया को ‘समास-विग्रह’ कहते हैं। जैसे- यथाशक्ति = शक्ति के अनुसार।

हिन्दी में समास प्रायः नए शब्द-निर्माण हेतु प्रयोग में लिए जाते हैं। भाषा में संक्षिप्तता, उत्कृष्टता, तीव्रता व गंभीरता लाने के लिए भी समास उपयोगी हैं। समास प्रकरण संस्कृत साहित्य में अति प्राचीन प्रतीत होता है। श्रीमद्भगवद्गीता में भगवान श्रीकृष्ण ने भी कहा है- “मैं समासों में द्वन्द्व समास में हूँ।”

जिन दो मुख्य शब्दों के मेल से समास बनता है, उन शब्दों को खण्ड या अवयव या पद कहते हैं। समस्त पद या सामासिक पद का विग्रह करने पर समस्त पद के दो पद बन जाते हैं— पूर्व पद और उत्तर पद। जैसे— घनश्याम में 'घन' पूर्व पद और 'श्याम' उत्तर पद है।

जिस खण्ड या पद पर अर्थ का मुख्य बल पड़ता है, उसे प्रधान पद कहते हैं। जिस पद पर अर्थ का बल नहीं पड़ता, उसे गौण पद कहते हैं।

इस आधार पर (संस्कृत की दृष्टि से) समास के चार भेद माने गए हैं—

1. जिस समास में पूर्व पद प्रधान होता है, वह—'अव्ययीभाव समास'।
2. जिस समास में उत्तर पद प्रधान होता है, वह—'तत्पुरुष समास'।
3. जिस समास में दोनों पद प्रधान हों, वह—'द्वन्द्व समास' तथा
4. जिस समास में दोनों पदों में से कोई प्रधान न हो, वह—'बहुब्रीहि समास'।

हिन्दी में समास के छः भेद प्रचलित हैं। जो निम्न प्रकार हैं—

1. अव्ययीभाव समास
2. तत्पुरुष समास
3. द्वन्द्व समास
4. बहुब्रीहि समास
5. कर्मधारय समास
6. द्विगु समास।

## 1. अव्ययीभाव समास-

जिस समस्त पद में पहला पद अव्यय होता है, अर्थात् अव्यय पद के साथ दूसरे पद, जो संज्ञा या कुछ भी हो सकता है, का समास किया जाता है, उसे अव्ययीभाव समास कहते हैं। प्रथम पद के साथ मिल जाने पर समस्त पद ही अव्यय बन जाता है। इन समस्त पदों का प्रयोग क्रियाविशेषण के समान होता है।

अव्यय शब्द वे हैं जिन पर काल, वचन, पुरुष, लिंग आदि का कोई प्रभाव नहीं पड़ता अर्थात् रूप परिवर्तन नहीं होता। ये शब्द जहाँ भी प्रयुक्त किये जाते हैं, वहाँ उसी रूप में ही रहेंगे। जैसे- यथा, प्रति, आ, हर, बे, नि आदि।

पद के क्रिया विशेषण अव्यय की भाँति प्रयोग होने पर अव्ययीभाव समास की निम्नांकित स्थितियाँ बन सकती हैं-

- (1) अव्यय+अव्यय-ऊपर-नीचे, दाएँ-बाएँ, इधर-उधर, आस-पास, जैसे-तैसे, यथा-शक्ति, यत्र-तत्र।
- (2) अव्ययों की पुनरुक्ति- धीरे-धीरे, पास-पास, जैसे-जैसे।
- (3) संज्ञा+संज्ञा- नगर-डगर, गाँव-शहर, घर-द्वार।
- (4) संज्ञाओं की पुनरुक्ति- दिन-दिन, रात-रात, घर-घर, गाँव-गाँव, वन-वन।
- (5) संज्ञा+अव्यय- दिवसोपरान्त, क्रोध-वश।

(6) विशेषण संज्ञा- प्रतिदिवस, यथा अवसर।

(7) कृदन्त+कृदन्त- जाते-जाते, सोते-जागते।

(8) अव्यय+विशेषण- भरसक, यथासम्भव।

अव्ययीभाव समास के उदाहरण:

समस्त-पद – विग्रह

यथारूप – रूप के अनुसार

यथायोग्य – जितना योग्य हो

यथाशक्ति – शक्ति के अनुसार

प्रतिक्षण – प्रत्येक क्षण

भरपूर – पूरा भरा हुआ

अत्यन्त – अन्त से अधिक

रातोंरात – रात ही रात में

अनुदिन – दिन पर दिन

निरन्ध्र – रन्ध्र से रहित

आमरण – मरने तक

आजन्म – जन्म से लेकर

आजीवन – जीवन पर्यन्त

प्रतिशत – प्रत्येक शत (सौ) पर

भरपेट – पेट भरकर

प्रत्यक्ष – अक्षि (आँखों) के सामने

दिनोंदिन – दिन पर दिन

सार्थक – अर्थ सहित

सप्रसंग – प्रसंग के साथ

प्रत्युत्तर – उत्तर के बदले उत्तर

यथार्थ – अर्थ के अनुसार

आकंठ – कंठ तक

घर-घर – हर घर/प्रत्येक घर

यथाशीघ्र – जितना शीघ्र हो

श्रद्धापूर्वक – श्रद्धा के साथ

अनुरूप – जैसा रूप है वैसा

अकारण – बिना कारण के

हाथों हाथ – हाथ ही हाथ में

बेधड़क – बिना धड़क के  
प्रतिपल – हर पल  
नीरोग – रोग रहित  
यथाक्रम – जैसा क्रम है  
साफ-साफ – बिल्कुल स्पष्ट  
यथेच्छ – इच्छा के अनुसार  
प्रतिवर्ष – प्रत्येक वर्ष  
निर्विरोध – बिना विरोध के  
नीरव – रव (ध्वनि) रहित  
बेवजह – बिना वजह के  
प्रतिबिंब – बिंब का बिंब  
दानार्थ – दान के लिए  
उपकूल – कूल के समीप की  
क्रमानुसार – क्रम के अनुसार  
कर्मानुसार – कर्म के अनुसार  
अंतर्व्यथा – मन के अंदर की व्यथा



यथासंभव – जहाँ तक संभव हो

यथावत् – जैसा था, वैसा ही

यथास्थान – जो स्थान निर्धारित है

प्रत्युपकार – उपकार के बदले किया जाने वाला उपकार

मंद-मंद – मंद के बाद मंद, बहुत ही मंद

## 2. तत्पुरुष समास-

जिस समास में दूसरा पद अर्थ की दृष्टि से प्रधान हो, उसे तत्पुरुष समास कहते हैं। इस समास में पहला पद संज्ञा अथवा विशेषण होता है इसलिए वह दूसरे पद विशेष्य पर निर्भर करता है, अर्थात् दूसरा पद प्रधान होता है। तत्पुरुष समास का लिंग-वचन अंतिम पद के अनुसार ही होता है। जैसे- जलधारा का विग्रह है- जल की धारा। 'जल की धारा बह रही है' इस वाक्य में 'बह रही है' का सम्बन्ध धारा से है जल से नहीं। धारा के कारण 'बह रही' क्रिया स्त्रीलिंग में है। यहाँ बाद वाले शब्द 'धारा' की प्रधानता है अतः यह तत्पुरुष समास है।

तत्पुरुष समास में प्रथम पद के साथ कर्त्ता और सम्बोधन कारकों को छोड़कर अन्य कारक चिह्नों (विभक्तियों) का प्रायः लोप हो जाता है। अतः पहले पद में जिस कारक या विभक्ति का लोप होता है, उसी कारक या विभक्ति के नाम से इस समास का नामकरण होता है।

Visit :- [www.GkNotesPDF.com](http://www.GkNotesPDF.com)

जैसे – द्वितीया या कर्मकारक तत्पुरुष = स्वर्गप्राप्त – स्वर्ग को प्राप्त।

कारक चिह्न इस प्रकार हैं –

क्र.सं. कारक का नाम चिह्न

1– कर्ता – ने

2– कर्म – को

3– करण – से (के द्वारा)

4– सम्प्रदान – के लिए

5– अपादान – से (पृथक् भाव में)

6– सम्बन्ध – का, की, के, रा, री, रे

7– अधिकरण – में, पर, ऊपर

8– सम्बोधन – हे!, अरे! ओ!

चूँकि तत्पुरुष समास में कर्ता और संबोधन कारक-चिह्नों का लोप नहीं होता अतः इसमें इन दोनों के उदाहरण नहीं हैं। अन्य कारक चिह्नों के आधार पर तत्पुरुष समास के भेद इस प्रकार हैं –

(1) कर्म तत्पुरुष –

समस्त पद विग्रह

हस्तगत – हाथ को गत

जातिगत – जाति को गया हुआ

मुँहतोड़ – मुँह को तोड़ने वाला

दुःखहर – दुःख को हरने वाला

यशप्राप्त – यश को प्राप्त

पदप्राप्त – पद को प्राप्त

ग्रामगत – ग्राम को गत

स्वर्ग प्राप्त – स्वर्ग को प्राप्त

देशगत – देश को गत

आशातीत – आशा को अतीत(से परे)

चिड़ीमार – चिड़ी को मारने वाला

कठफोड़वा – काष्ठ को फोड़ने वाला

दिलतोड़ – दिल को तोड़ने वाला

जीतोड़ – जी को तोड़ने वाला

जीभर – जी को भरकर

लाभप्रद – लाभ को प्रदान करने वाला

शरणागत – शरण को आया हुआ

रोजगारोन्मुख – रोजगार को उन्मुख

सर्वज्ञ – सर्व को जानने वाला

गगनचुम्बी – गगन को चूमने वाला

परलोकगमन – परलोक को गमन

चित्तचोर – चित्त को चोरने वाला

ख्याति प्राप्त – ख्याति को प्राप्त

दिनकर – दिन को करने वाला

जितेन्द्रिय – इंद्रियों को जीतने वाला

चक्रधर – चक्र को धारण करने वाला

धरणीधर – धरणी (पृथ्वी) को धारण करने वाला

गिरिधर – गिरि को धारण करने वाला

हलधर – हल को धारण करने वाला

मरणातुर – मरने को आतुर

कालातीत – काल को अतीत (परे) करके

वयप्राप्त – वय (उम्र) को प्राप्त

(ख) करण तत्पुरुष –

तुलसीकृत – तुलसी द्वारा कृत

अकालपीड़ित – अकाल से पीड़ित

श्रमसाध्य – श्रम से साध्य

कष्टसाध्य – कष्ट से साध्य

ईश्वरदत्त – ईश्वर द्वारा दिया गया

रत्नजड़ित – रत्न से जड़ित

हस्तलिखित – हस्त से लिखित

अनुभव जन्य – अनुभव से जन्य

रेखांकित – रेखा से अंकित

गुरुदत्त – गुरु द्वारा दत्त

सूरकृत – सूर द्वारा कृत

दयार्द्र – दया से आर्द्र

मुँहमाँगा – मुँह से माँगा

मदमत्त – मद (नशे) से मत्त

रोगातुर – रोग से आतुर

भुखमरा – भूख से मरा हुआ

कपड़छान – कपड़े से छाना हुआ

स्वयंसिद्ध – स्वयं से सिद्ध

शोकाकुल – शोक से आकुल

मेघाच्छन्न – मेघ से आच्छन्न

अश्रुपूर्ण – अश्रु से पूर्ण

वचनबद्ध – वचन से बद्ध

वाग्युद्ध – वाक् (वाणी) से युद्ध

क्षुधातुर – क्षुधा से आतुर

शल्यचिकित्सा – शल्य (चीर-फाड़) से चिकित्सा

आँखोंदेखा – आँखों से देखा

(ग) सम्प्रदान तत्पुरुष –

देशभक्ति – देश के लिए भक्ति

गुरुदक्षिणा – गुरु के लिए दक्षिणा

भूतबलि – भूत के लिए बलि  
प्रौढ़ शिक्षा – प्रौढ़ों के लिए शिक्षा  
यज्ञशाला – यज्ञ के लिए शाला  
शपथपत्र – शपथ के लिए पत्र  
स्नानागार – स्नान के लिए आगार  
कृष्णार्पण – कृष्ण के लिए अर्पण  
युद्धभूमि – युद्ध के लिए भूमि  
बलिपशु – बलि के लिए पशु  
पाठशाला – पाठ के लिए शाला  
रसोईघर – रसोई के लिए घर  
हथकड़ी – हाथ के लिए कड़ी  
विद्यालय – विद्या के लिए आलय  
विद्यामंदिर – विद्या के लिए मंदिर  
डाक गाड़ी – डाक के लिए गाड़ी  
सभाभवन – सभा के लिए भवन  
आवेदन पत्र – आवेदन के लिए पत्र

हवन सामग्री – हवन के लिए सामग्री  
कारागृह – कैदियों के लिए गृह  
परीक्षा भवन – परीक्षा के लिए भवन  
सत्याग्रह – सत्य के लिए आग्रह  
छात्रावास – छात्रों के लिए आवास  
युववाणी – युवाओं के लिए वाणी  
समाचार पत्र – समाचार के लिए पत्र  
वाचनालय – वाचन के लिए आलय  
चिकित्सालय – चिकित्सा के लिए आलय  
बंदीगृह – बंदी के लिए गृह  
(घ) अपादान तत्पुरुष –  
रोगमुक्त – रोग से मुक्त  
लोकभय – लोक से भय  
राजद्रोह – राज से द्रोह  
जलरिक्त – जल से रिक्त  
नरकभय – नरक से भय



देशनिष्कासन – देश से निष्कासन

दोषमुक्त – दोष से मुक्त

बंधनमुक्त – बंधन से मुक्त

जातिभ्रष्ट – जाति से भ्रष्ट

कर्तव्यच्युत – कर्तव्य से

### 3- द्वन्द्व समास –

जिस समस्त पद में दोनों अथवा सभी पद प्रधान हों तथा उनके बीच में समुच्चयबोधक-‘और, या, अथवा, आदि’ का लोप हो गया हो, तो वहाँ द्वन्द्व समास होता है। जैसे –

अन्नजल – अन्न और जल

देश-विदेश – देश और विदेश

राम-लक्ष्मण – राम और लक्ष्मण

रात-दिन – रात और दिन

खट्टामीठा – खट्टा और मीठा

जला-भुना – जला और भुना

माता-पिता – माता और पिता

दूधरोटी – दूध और रोटी  
पढ़ा-लिखा – पढ़ा और लिखा  
हरि-हर – हरि और हर  
राधाकृष्ण – राधा और कृष्ण  
राधेश्याम – राधे और श्याम  
सीताराम – सीता और राम  
गौरीशंकर – गौरी और शंकर  
अड़सठ – आठ और साठ  
पच्चीस – पाँच और बीस  
छात्र-छात्राएँ – छात्र और छात्राएँ  
कन्द-मूल-फल – कन्द और मूल और फल  
गुरु-शिष्य – गुरु और शिष्य  
राग-द्वेष – राग या द्वेष  
एक-दो – एक या दो  
दस-बारह – दस या बारह  
लाख-दो-लाख – लाख या दो लाख

पल-दो-पल – पल या दो पल

आर-पार – आर या पार

पाप-पुण्य – पाप या पुण्य

उल्टा-सीधा – उल्टा या सीधा

कर्तव्याकर्तव्य – कर्तव्य अथवा अकर्तव्य

सुख-दुख – सुख अथवा दुख

जीवन-मरण – जीवन अथवा मरण

धर्माधर्म – धर्म अथवा अधर्म

लाभ-हानि – लाभ अथवा हानि

यश-अपयश – यश अथवा अपयश

हाथ-पाँव – हाथ, पाँव आदि

नोन-तेल – नोन, तेल आदि

रुपया-पैसा – रुपया, पैसा आदि

आहार-निद्रा – आहार, निद्रा आदि

जलवायु – जल, वायु आदि

कपड़े-लत्ते – कपड़े, लत्ते आदि

बहू-बेटी – बहू, बेटी आदि  
पाला-पोसा – पाला, पोसा आदि  
साग-पात – साग, पात आदि  
काम-काज – काम, काज आदि  
खेत-खलिहान – खेत, खलिहान आदि  
लूट-मार – लूट, मार आदि  
पेड़-पौधे – पेड़, पौधे आदि  
भला-बुरा – भला, बुरा आदि  
दाल-रोटी – दाल, रोटी आदि  
ऊँच-नीच – ऊँच, नीच आदि  
धन-दौलत – धन, दौलत आदि  
आगा-पीछा – आगा, पीछा आदि  
चाय-पानी – चाय, पानी आदि  
भूल-चूक – भूल, चूक आदि  
फल-फूल – फल, फूल आदि  
खरी-खोटी – खरी, खोटी आदि

## 4 - बहुव्रीहि समास -

जिस समस्त पद में कोई भी पद प्रधान नहीं हो, अर्थात् समास किये गये दोनों पदों का शाब्दिक अर्थ छोड़कर तीसरा अर्थ या अन्य अर्थ लिया जावे, उसे बहुव्रीहि समास कहते हैं। जैसे - 'लम्बोदर' का सामान्य अर्थ है- लम्बे उदर (पेट) वाला, परन्तु लम्बोदर समास में अन्य अर्थ होगा - लम्बा है उदर जिसका वह-गणेश।

अजानुबाहु - जानुओं (घुटनों) तक बाहुएँ हैं जिसकी वह-विष्णु

अजातशत्रु - नहीं पैदा हुआ शत्रु जिसका-कोई व्यक्ति विशेष

वज्रपाणि - वह जिसके पाणि (हाथ) में वज्र है-इन्द्र

मकरध्वज - जिसके मकर का ध्वज है वह-कामदेव

रतिकांत - वह जो रति का कांत (पति) है-कामदेव

आशुतोष - वह जो आशु (शीघ्र) तुष्ट हो जाते हैं-शिव

पंचानन - पाँच है आनन (मुँह) जिसके वह-शिव

वाग्देवी - वह जो वाक् (भाषा) की देवी है-सरस्वती

युधिष्ठिर - जो युद्ध में स्थिर रहता है-धर्मराज (ज्येष्ठ पाण्डव)

षडानन - वह जिसके छह आनन हैं-कार्तिकेय

सप्तऋषि - वे जो सात ऋषि हैं-सात ऋषि विशेष जिनके नाम

निश्चित हैं

त्रिवेणी – तीन वेणियों (नदियों) का संगमस्थल—प्रयाग

पंचवटी – पाँच वटवृक्षों के समूह वाला स्थान—मध्य प्रदेश में स्थान विशेष

रामायण – राम का अयन (आश्रय)—वाल्मीकि रचित काव्य

पंचामृत – पाँच प्रकार का अमृत—दूध, दही, शक्कर, गोबर, गोमूत्र का रसायन विशेष

षड्दर्शन – षट् दर्शनों का समूह—छह विशिष्ट भारतीय दर्शन—न्याय, सांख्य, द्वैत आदि

चारपाई – चार पाए हों जिसके—खाट

विषधर – विष को धारण करने वाला—साँप

अष्टाध्यायी – आठ अध्यायों वाला—पाणिनि कृत व्याकरण

चक्रधर – चक्र धारण करने वाला—श्रीकृष्ण

पतझड़ – वह ऋतु जिसमें पत्ते झड़ते हैं—बसंत

दीर्घबाहु – दीर्घ हैं बाहु जिसके—विष्णु

पतिव्रता – एक पति का व्रत लेने वाली—वह स्त्री

तिरंगा – तीन रंगों वाला—राष्ट्रध्वज

अंशुमाली – अंशु है माला जिसकी—सूर्य  
महात्मा – महान् है आत्मा जिसकी—ऋषि  
वक्रतुण्ड – वक्र है तुण्ड जिसकी—गणेश  
दिगम्बर – दिशाएँ ही हैं वस्त्र जिसके—शिव  
घनश्याम – जो घन के समान श्याम है—कृष्ण  
प्रफुल्लकमल – खिले हैं कमल जिसमें—वह तालाब  
महावीर – महान् है जो वीर—हनुमान व भगवान महावीर  
लोकनायक – लोक का नायक है जो—जयप्रकाश नारायण  
महाकाव्य – महान् है जो काव्य—रामायण, महाभारत आदि  
अनंग – वह जो बिना अंग का है—कामदेव  
एकदन्त – एक दंत है जिसके—गणेश  
नीलकण्ठ – नीला है कण्ठ जिनका—शिव  
पीताम्बर – पीत (पीले) हैं वस्त्र जिसके—विष्णु  
कपीश्वर – कपि (वानरों) का ईश्वर है जो—हनुमान  
वीणापाणि – वीणा है जिसके पाणि में—सरस्वती  
देवराज – देवों का राजा है जो—इन्द्र

हलधर – हल को धारण करने वाला

शशिधर – शशि को धारण करने वाला—शिव

दशमुख – दस हैं मुख जिसके—रावण

चक्रपाणि – चक्र है जिसके पाणि में – विष्णु

पंचानन – पाँच हैं आनन जिसके—शिव

पद्मासना – पद्म (कमल) है आसन जिसका—लक्ष्मी

मनोज – मन से जन्म लेने वाला—कामदेव

गिरिधर – गिरि को धारण करने वाला—श्रीकृष्ण

वसुंधरा – वसु (धन, रत्न) को धारण करती है जो—धरती

त्रिलोचन – तीन हैं लोचन (आँखें) जिसके—शिव

वज्रांग – वज्र के समान अंग हैं जिसके—हनुमान

शूलपाणि – शूल (त्रिशूल) है पाणि में जिसके—शिव

चतुर्भुज – चार हैं भुजाएँ जिसकी—विष्णु

लम्बोदर – लम्बा है उदर जिसका—गणेश

चन्द्रचूड़ – चन्द्रमा है चूड़ (ललाट) पर जिसके—शिव

पुण्डरीकाक्ष – पुण्डरीक (कमल) के समान अक्षि (आँखें) हैं  
जिसकी—विष्णु



रघुनन्दन – रघु का नन्दन है जो—राम  
सूतपुत्र – सूत (सारथी) का पुत्र है जो—कर्ण  
चन्द्रमौलि – चन्द्र है मौलि (मस्तक) पर जिसके—शिव  
चतुरानन – चार हैं आनन (मुँह) जिसके—ब्रह्मा  
अंजनिनन्दन – अंजनि का नन्दन (पुत्र) है जो—हनुमान  
पंकज – पंक् (कीचड़) में जन्म लेता है जो—कमल  
निशाचर – निशा (रात्रि) में चर (विचरण) करता है जो—राक्षस  
मीनकेतु – मीन के समान केतु हैं जिसके—विष्णु  
नाभिज – नाभि से जन्मा (उत्पन्न) है जो—ब्रह्मा  
वीणावादिनी – वीणा बजाती है जो—सरस्वती  
नगराज – नग (पहाड़ों) का राजा है जो—हिमालय  
वज्रदन्ती – वज्र के समान दाँत हैं जिसके—हाथी  
मारुतिनन्दन – मारुति (पवन) का नन्दन है जो—हनुमान  
शचिपति – शचि का पति है जो—इन्द्र  
वसन्तदूत – वसन्त का दूत है जो—कोयल  
गजानन – गज (हाथी) जैसा मुख है जिसका—गणेश

गजवदन – गज जैसा वदन (मुख) है जिसका—गणेश

ब्रह्मपुत्र – ब्रह्मा का पुत्र है जो—नारद

भूतनाथ – भूतों का नाथ है जो—शिव

षटपद – छह पैर हैं जिसके—भौरा

लंकेश – लंका का ईश (स्वामी) है जो—रावण

सिन्धुजा – सिन्धु में जन्मी है जो—लक्ष्मी

दिनकर – दिन को करता है जो—सूर्य

## 5 - कर्मधारय समास –

जिस समास में उत्तरपद प्रधान हो तथा पहला पद विशेषण अथवा उपमान (जिसके द्वारा उपमा दी जाए) हो और दूसरा पद विशेष्य अथवा उपमेय (जिसके द्वारा तुलना की जाए) हो, उसे कर्मधारय समास कहते हैं।

इस समास के दो रूप हैं—

(i) विशेषता वाचक कर्मधारय— इसमें प्रथम पद द्वितीय पद की विशेषता बताता है। जैसे –

महाराज – महान् है जो राजा  
महापुरुष – महान् है जो पुरुष  
नीलाकाश – नीला है जो आकाश  
महाकवि – महान् है जो कवि  
नीलोत्पल – नील है जो उत्पल (कमल)  
महापुरुष – महान् है जो पुरुष  
महर्षि – महान् है जो ऋषि  
महासंयोग – महान् है जो संयोग  
शुभागमन – शुभ है जो आगमन  
सज्जन – सत् है जो जन  
महात्मा – महान् है जो आत्मा  
सद्बुद्धि – सत् है जो बुद्धि  
मंदबुद्धि – मंद है जिसकी बुद्धि  
मंदाग्नि – मंद है जो अग्नि  
बहुमूल्य – बहुत है जिसका मूल्य  
पूर्णांक – पूर्ण है जो अंक

भ्रष्टाचार – भ्रष्ट है जो आचार

शिष्टाचार – शिष्ट है जो आचार

अरुणाचल – अरुण है जो अचल

शीतोष्ण – जो शीत है जो उष्ण है

देवर्षि – देव है जो ऋषि है

परमात्मा – परम है जो आत्मा

अंधविश्वास – अंधा है जो विश्वास

कृतार्थ – कृत (पूर्ण) हो गया है जिसका अर्थ (उद्देश्य)

दृढ़प्रतिज्ञ – दृढ़ है जिसकी प्रतिज्ञा

राजर्षि – राजा है जो ऋषि है

अंधकूप – अंधा है जो कूप

कृष्ण सर्प – कृष्ण (काला) है जो सर्प

नीलगाय – नीली है जो गाय

नीलकमल – नीला है जो कमल

महाजन – महान् है जो जन

महादेव – महान् है जो देव

श्वेताम्बर – श्वेत है जो अम्बर  
पीताम्बर – पीत है जो अम्बर  
अधपका – आधा है जो पका  
अधखिला – आधा है जो खिला  
लाल टोपी – लाल है जो टोपी  
सद्धर्म – सत् है जो धर्म  
कालीमिर्च – काली है जो मिर्च  
महाविद्यालय – महान् है जो विद्यालय  
परमानन्द – परम है जो आनन्द  
दुरात्मा – दुर् (बुरी) है जो आत्मा  
भलमानुष – भला है जो मनुष्य  
महासागर – महान् है जो सागर  
महाकाल – महान् है जो काल  
महाद्वीप – महान् है जो द्वीप  
कापुरुष – कायर है जो पुरुष  
बड़भागी – बड़ा है भाग्य जिसका

कलमुँहा – काला है मुँह जिसका  
नकटा – नाक कटा है जो  
जवाँ मर्द – जवान है जो मर्द  
दीर्घायु – दीर्घ है जिसकी आयु  
अधमरा – आधा मरा हुआ  
निर्विवाद – विवाद से निवृत्त  
महाप्रज्ञ – महान् है जिसकी प्रज्ञा  
नलकूप – नल से बना है जो कूप  
परकटा – पर हैं कटे जिसके  
दुमकटा – दुम है कटी जिसकी  
प्राणप्रिय – प्रिय है जो प्राणों को  
अल्पसंख्यक – अल्प हैं जो संख्या में  
पुच्छलतारा – पूँछ है जिस तारे की  
नवागन्तुक – नया है जो आगन्तुक  
वक्रतुण्ड – वक्र (टेढ़ी) है जो तुण्ड  
चौसिंगा – चार हैं जिसके सींग

अधजला – आधा है जो जला

अतिवृष्टि – अति है जो वृष्टि

महारानी – महान् है जो रानी

नराधम – नर है जो अधम (पापी)

नवदम्पति – नया है जो दम्पति

(ii) उपमान वाचक कर्मधारय– इसमें एक पद उपमान तथा द्वितीय पद उपमेय होता है। जैसे –

बाहुदण्ड – बाहु है दण्ड समान

चंद्रवदन – चंद्रमा के समान वदन (मुख)

कमलनयन – कमल के समान नयन

मुखारविंद – अरविंद रूपी मुख

मृगनयनी – मृग के समान नयनों वाली

मीनाक्षी – मीन के समान आँखों वाली

चन्द्रमुखी – चन्द्रमा के समान मुख वाली

चन्द्रमुख – चन्द्र के समान मुख

नरसिंह – सिंह रूपी नर

चरणकमल – कमल रूपी चरण

क्रोधाग्नि – अग्नि के समान क्रोध

कुसुमकोमल – कुसुम के समान कोमल

ग्रन्थरत्न – रत्न रूपी ग्रन्थ

पाषाण हृदय – पाषाण के समान हृदय

देहलता – देह रूपी लता

कनकलता – कनक के समान लता

करकमल – कमल रूपी कर

वचनामृत – अमृत रूपी वचन

अमृतवाणी – अमृत रूपी वाणी

विद्याधन – विद्या रूपी धन

वज्रदेह – वज्र के समान देह

संसार सागर – संसार रूपी सागर



ONLINE TAIYARI GROUP --> +91-9555951655

**ONLINE TAIYARI GROUP**

**+91-9555951655**

Visit :- [www.GkNotesPDF.com](http://www.GkNotesPDF.com)